।।श्रीगणेशाय नम।। अथ पद लिष्यते ।। राग भै
रू ताल चौतालो ।। तुम हो गनपत देहो बुध दा
ता धरै सीस गज तुंड ।। सिद्ध श्री नांव तिहा
रो धरीये जित ही विद्याधर सपत दीप नव ष
ड ।।१।। संसकृत उर रिद्धि सिध लीये चंदन
लेप कीये भुज दंड ।। तांनसेन प्रभु तुम ही
कों ध्यावत काहा रूद्र कहा पिंड ।।२।। राग भै
रू ।। मोसों जो अवध बद गये सांझ की पिय आ
ये भोर भये ।। ऐसी कोन चतुर नार जिन तुम
बिरमाये ऐसी रूप दये ।।१।। अधर न अंजन
पीक लीक लागे उर नष चैन भये ।। धोंधी के प्र
भु तुम बोहो नायक कीने नेह नये ।।२।। देषो दे
षो सषि हो अब पियन रूप देत हो कजनां ।। बिथु
री अलक पीक पलक बंक तन अधर मंद तग म
सिथल गात उर सांवरि तनां ।।१।। नवल न कुंज
कुसम कुंज रचत सिज मैन [illegible] कलित दो
कू अंग श्रम जल कनां ।।
त नैन चाहत बिलक वल [illegible]
हंत बास दासी जनां ।।
लो ।। इन सो नन कै माई री
[illegible] देषन न पाऊ ।। बिसगरी
हैरी अरी रूतो कब हू कब
ऊ ।।१।। फिरो घर घर धेरो कर [illegible]

याहो [illegible] अरन चक
[illegible]त तालो तितालो ।। प्या
।।टेर।। ललित त्रिभंगी बि
र आंके ।।१।। कहि धोंध
सिब ये इन ह कहांके ।।
बिहारी ।। पिय जांनन
[illegible] अथ तितालो ।।

कीईकनचलाकु॥ राजारांमकेआगेबा
दलीरागरंगकररिझकु॥२॥४॥ ताल
इकतालो॥ बनबनवारी हो षेलतमोलत
गायनकेसंग॥धोरीधूमर कारीकाजर ति
नकोनांम लैलैरगरंग।१।मेरो पियाचंदसो
उजियारो॥ घरी घरी पलछिन कलनपरत हे
नेकनकीज मारो॥२॥५॥ रागनेरू ताल
आसवारी॥मारूडाजीम्हांने आवेछै होनीदमा
रूडाजीम्हांनेआवैछै॥ म्हे तौ थांरी दासीस्पाबाज
नमजनमरी॥पोढडीनेआंणजगावेछै॥६॥राग
नेरू ताल आसवारी॥नीकीलागेछै म्हांने आंन
हो सांवलाजी थांरी नीकीलागेछैम्हांने आंन॥
कबकीमे ठाढीठाढी अरजकरांछां। तनधनक
रांकुरबांन॥७॥राग बिन्नास तालदुतालो॥
हो मन सब रसको रससार॥ लोकलदकलव
महीतजीये तजीये नित बिहार॥१॥ यहकाम
बित पति पो। सेवा स्यांमउदार॥ कहै
झमन। रांमनांमउरधार॥२॥
तितालो॥ बामेगरबई
अंगना॥ तारनकीजोतबुदी
॥ मुषकी तंबोल फीकीनेनका
॥ बिन्नास तालदुतालो॥
लनवबैवे॥ अरसपरसहोऊकर

तसिंगार॥तनपहरीवाकीमोतनमाला।तनप
हरयौवाकोनवसरहार॥१॥लटपटपेचसवारन
स्यांम।अलकसंवारतनंदकुमार॥जैश्रीलल
जुगलवाकीजोरी।मेरैरीआंगनकरतबिहार
॥२॥१०॥रागबिलासतालजतालौ॥ढीलीढील
मगलैरौढीलीपागढरकरही॥कहैसेपरतऐसी
कौनपरकहेहौ॥गाढिजौ हीयाकेपिय ऐसीगाढ
कोनलिया॥गाढगाढनैजनसौंगाढकरगहेहौ
॥१॥लालनलोयनउनीदेलागलागजात।सांची
कहौरसकप्यारेमैतोजानलहेहौ॥रसवरसात
अलसातसगुचगातआएप्रातकहौवातरात
कहांरहेहौ॥२॥११॥रागबिलास तालजतालौ॥
कंचुकीकसतरकतरकटूटतदेषतमदनमो
हनघनस्यांम॥मोसौंकहादुरावकरतहौउमगत
उरजडरतक्यौंआंम॥१॥बदनकमलपरअल
कावलमांनौं।षंजनमधुपलितबिश्रांम॥कृष्ण
दासप्रभुगिरधरनागरायाहीलालजावत
कांम॥२॥१२॥रागललिततालतितालौ॥प्या
रीतेरेनैनारीअतिबांके॥टेर॥ललितत्रिभंगीबि
हारीनागरातेंअपनेकरआंके॥१॥कहिधौं कु
वरिकिशोरीकोकगुन।सिषयेइनहकहांके॥
श्रीविठलविठलविनोदविहारी॥पियप्रांनन
मेंटांके॥२॥१३॥रागललितमधतितालौ॥

॥टेर॥
न्यौछैरैनैतिपरबिनछूटत॥नैनौजादुकली
रनबेर॥हितअरुतरसछूटत॥१॥कहांकहे
इतनैतवैतरो॥हूनलागतहूतहूटत॥श्रीवि
लरौइठबिलैठ बिहारी॥पियकैसरवसलूट
॥२॥१४॥राग॥ठाढ़ेंनैनासैबिलाबैल॥प्यारीइत
कजरहूलैचारी॥ नांनैनवठसतदेवसब
र॥टेर॥चंपेकोसीनारवैवेअलिक्रेंछी॥जा
जवडीअरअर॥१॥जवडीआंतघिरतकटकक
मकै॥तवजियहोतनरानर॥श्रीहरिदासकेस्
मीस्यामाकुजविहारी॥हितसिलहरतजरान
॥२॥१५॥राग॥ठाढ़ेंनैनानैलिनाके॥उतीठ
अंचेरीलरी॥वरनारैनबकोट॥टेर॥चंचल
चपलसुरंगहवीलौ॥आंतवतैनाजेट॥१॥
इरतहुरतदपकतअतियारे॥चंचलकरतै
चोट॥चतुरबिहारीप्यारीकोछविनिरखत॥ज
अतसुबर्कोट॥२॥१६॥राग॥ठेलनानैर
नैनौ॥नहिंआरगिरवरधारीहोतागर॥
टेर॥जियकीकृपाजवडीमेंजोती॥जोरखुल
रहेआगर॥१॥

॥रा॥१८॥राग
लितनत्यांतिनानौ॥कांईछवनागाबेवा
राज॥टेर॥पायलवाजैमुरीनवछ्वजागे॥म

फकरौमाहाराज ॥२॥१८॥ राग ललित ताल ति
तालै ॥ प्यारीजीम्हांसूं रूसर ह्यागो । किणकाज
॥ टेर ॥ अमलांरारा तामा तांम्हांरै म्हैलां आय
॥ सुफल नयो सबकाज ॥२॥१९॥ राग देवगं
धार ताल आमौचौतालौ ॥ तनकउमचित
वौमेरीओर ॥ टेर ॥ हम चितवत उमेंचितवत
कं हो करमकीबोर ॥१॥ मैं पियाजीकूं यौव
सिकरिलुं । स्युं सुंदियन वसिमोर । आनंदघ
न पिया निसदिन चितवंत । चितवत होइग
येनौरै ॥२॥२०॥ राग देवगंधार ताल आमौचौता
लौ ॥ दिषोइन लोगनहीकीबांनी ॥ टेर ॥ छूटतनां
हीहरिचरननकूं ॥ मिथ्याजनमगुमांनी ॥१॥ जं
वजमदूतआयेघेरनकूं । करत आपमनमां
नी ॥ कहै श्रीहरिदाससमझिमनां । निसदिनय
हगुनगावनी ॥२॥२१॥ राग देवगंधार ताल आ
मौचौतालौ । तिरौ मघजोवत लाल बिहारी ॥
॥ टेर ॥ तिरौ समाज अजहिन छूटत । चाहत नां
हिं कुंहारी ॥१॥ औचक आय दोऊ कर सं मुष ॥
सैन नदेत विहारी ॥ श्रीहरिदासके स्वामी स्
मा । कुंजविहारीकीलेतनैं बावरन्वारी ॥२॥
२२॥ राग षट ताल चलत तेलो ॥ कौतौ थां परन्
रीन्वारीन्वारी हो विहारीजी ॥ म्हे डमुसकन
परकुर्ईबलिहारीजी ॥ टेर ॥ लाज

री लैरां लागी बाला ॥ थिकाईनरधारी है बिहारीजी ॥ लाषांवा ॥१॥ और तरैम तजां णो हो बिहारीजी ॥ लाषांवा तांप्यारी हो सांधारी हो गिरधारीजी ॥ ब्रजानिध अरज स्रूणोजी हमारी ॥ जमनमोहन हम प्यारी हो बिहारीजी ॥२॥२३॥ राग बट ताल चल त तिताला ॥ वांकी हीन्नो हन पघीयां वांकी ॥ वां केचितवन नैनांबांके ॥ टेर ॥ मैन हानैननिसे नहे तन ॥ नटन सषीरूनां करी हांकी ॥१॥ नर पिकंपिव चिजैरू निकसी ॥ वाट गहीवरसांना घांकी ॥ हरिबसाहब न्नु ब्रेलल घरकी ॥ का विधजातरहे गीढांकी ॥२॥२४॥ राग वि लावल ताल इकताला ॥ देषो माई कवर बन्यो दसरथको ॥ टेर ॥ नरकसी पाघ जराव किलंगी जांमो बन्यो जरकसको ॥१॥ नरमोतनका मा लमनोहर हाथ फूल नरगसको ॥ जन जुल बीके ए ही मन मांन्यो ॥ मुषमोस्यो मनमथको ॥२॥२५॥ राग बिलावल ताल इकतालो ॥ को नतेरा मुरली नैक बजाक ॥ टेर ॥ जो हीजो हीतांन स्रूनूते रे मुषकी ॥ सो हीसो ही गाय स्रूनाऊ ॥१॥ यहे स्रूषसनका हिकको डरलन्न ॥ बिछ्र पारनपांऊ ॥ स्रूरदास बन्नु तिहारी क्रपाते ॥ नि रषनैनस्रूषपाऊ ॥२॥२६॥ राग बिलावल त ल चलत तिताला ॥ होमेमाषांन बंसीवाला

मोरपषांदमुकटसोहंत। गरगुंजुंदीमाला॥१॥
बिथुरीअलकझलकगुघरारी।जरदउपट
वाला। सूरदासप्रभुतिहारीकृपातै।संतन
दरसवाला॥२॥२७॥रागबिलावलताल
चौताला॥जांनीमैआजातुमिलीप्यारेसूं॥
तैअपनौमननांवतौरीआलीकीयौ॥टेर॥
रसकझजांनलाजलौलनननतै॥अनतझ
जांननदीयौ॥१॥मोसोंकहादुरावकरतहो
॥दुरतनदुलकतहीयौ॥कृमनदासप्रभु
गिरधरपियकौ॥अधरसुधारसपीयौ॥
२॥२८॥रागबिलावलतालअसवारी॥अब
घरकेसैजाऊमेरीमईया॥पनघटठाढौहै
रीकनईया॥टेर॥काऊकौहारमोरझपटतहै॥
संकनमांनतरईया॥१॥कबऊकहसतबे
लतउरकनसंग॥बिचबिचमुरलीसबदसु
नईया॥दासजननहरषतप्रफुलतमन॥नि
रषनैनसुषपईया॥२॥२९॥रागबिलावल
नअसवारी॥आनंदवधावनौवधाव
नो॥मिलेआजमेरेहोसुरजंनवां॥टेर॥मो

तन चौक पुरावो सषी मिल ॥ आनंद मंगल गा
वनो ॥१॥ धुरत निसान नगारा नांपत ॥ बंदन
माल बधावनो ॥ सूरदास सवन्हि तिहारी कषा ते
निरष नैन सुषपांवनो ॥२॥ २०॥ राग विलाव
ल ताल ख्याल तितालो ॥ आज हरि रैन उनी
दे आए ॥ टेर ॥ अंजन अधर ललाट महावर
नैन तंबोल रचाए ॥१॥ दसन दाग नष रेष व
नी है ॥ बंदन कहां लगाए ॥ सिथल उदेह सिर
पाघ लटपटी ॥ छूटी चंदन लाए ॥२॥ वि
न गुन माल विराजत उर पर ॥ कंकन पीन
गनाए ॥ सूरदास प्रभु यहै अचंभो ॥ त्रिय
तिलक कहां पाए ॥३॥ २१॥ राग विलावल ताल
जलद तितालो ॥ मेरे प्रत रघुवर राज कंव
र ॥ टेर ॥ जरकसी पाघ केसरी थे वागे ॥ गल मु
कतावल हार ॥१॥ [illegible] नसक
क ॥ लीला नंत अपार ॥ सूरदास करजोर
कहत है ॥ यह है नांम निज सार ॥२॥ २२॥ रा
ग विलावल ताल चलत तितालो ॥ हिलीमं
लो सांवरो दिलदा मितना ॥ टेर ॥ कछ सागर अध

दूरकरतहै निसदिन रहत निचंत ॥२॥
३३॥ राग बिलावल चलत तिताले ॥ मु
जरो लीजोहो निजरमरो षैदी मुजरो लीजो
॥टेर॥ मि तो थांरा चाकर जनम जनम रा ॥ कू
ड कपट मत कीजो ॥ १॥ ३४॥ राग बिलावल
ताल चलत तिताले ॥ जलज मना को कन
ईया मोहि नरन दै हो जलज मना को कनईया ॥
टेर ॥ मेरे तो संग की दूर निकस गई घर मघजो
वै मेरी मईया ॥१॥ ३५॥ राग बिलावल सर परद
ताल चलत तिताले ॥ मोपै पट मास्यो टोना
स्यां मसलोना ॥टेर॥ नि नां विध हेरी मेरी आ
ली रूप बियन विच पांना ॥१॥ ३६॥ राग बि
लावल ताल इकताले ॥ प्रिया पीतांबर हु
रली जीती ॥टेर॥ हा हा करत न दे तुला ऊली
चरन लुटत निस बीती ॥१॥ राधाया हीउरा
ये सबी लखि ताहिकि रहो स्वीती ॥ श्री बिठ
ल विठल विनोद विहारन ॥ जगट करतरस
रीती ॥२॥ ३७॥ राग बिलावल ताल जल
द तिताले ॥ धंन घरी धन भाग हमारो हर

जीकोद रस करौम नमेरे ॥टेर॥ नक्रवक्र

नक्र नस्कषहाय क्र॥ रषियैचरनकवन

सांनेरे॥१॥ सेवासमरणकछु नहिजां॥

सातिरो हो विरह विचैरो॥ दासजननकर

जोरकहतहे॥ यहेबांनकमनमेरेवसेरे

॥२॥ राग बिलावल आंमेबोताजै॥ हर

कोऐसोहीसबषेल॥टेर॥ सृष्ट दासजगमा

परहीहै॥ करूबिजोराकक्रवेल॥१॥ धन

जोबनमदयुंराजतहे॥ युं पंछीयनमैठेल॥

कहैश्रीहरिदाससमझमन॥ तीरथकोसे

मेल॥२॥ राग बिलावल आंमेबोता

जै॥ लेगयोरेस्यांमामेरोमन ॥टेर॥ वंसरीव

जाईमनबहरांनै ॥स्रुत नांही तनविन॥१॥

॥ राग बिलावल तालचलतितालो॥

आंटौ निजरांरै हो कांई म्हांस्रु राजरा षण

नागा हां आंटौ निजरांरै॥टेर॥ सासछुरी

म्हांरी नणदहटीली॥ पाडोसणझगडारो

सांटौ॥१॥ थांरा जीराज म्हांनेदासी कहैवे

करौमतन्नीतमेवांटो रसकसनेहानिछ

रैजांनै॥थांरी सेझां मांहै म्हांरै वांटौ॥२॥
॥ध१॥छुन:॥मन हरन्यौ नौराज मन हरन्यौ
होइ नवगियानै॥टेर॥जंत्र मंत्र कछु मोह
नीसी पढ़ि टोनासो कर दीनौ॥१॥ नांव
नजांन्द कांन गांव कौ॥

॥वरजोरी त्रांन नवीनै
॥ध२॥राग विलावल ताल तिताले॥जीत
पटवारौ अंगरंग कौ हैसो वरौ॥नांव नजांन्द
ईया कांन कौ है मावरौ॥टेर॥ तटजमनाजू
के धेन चरावै॥विन वजावै रसकौ॥ आलीरी
तब तै मेरौ मन वावरौ॥१॥ध३॥राग विला
वल ताल तिताले चलती॥कैसे कर बंगरी
मोरी मुरकांनी मोरी माया॥रहे जूलं गरवा॥
थीव मेहरवा॥गुनरस हाथ विकांनी मोरी
माया॥टेर॥

॥१॥ध४॥राग विलावल ताल
तिताले॥नैननि निरख्यौ श्री गिरवर
धारी रसना रटौ नाम निसवासर कोट

।जनमउषदालदहारी॥ १॥सिवापरमस्कत
रविराजत॥यहसोनास्कदरइथकारी॥ब्र
जाधीसवल्लुसोनासागर॥मिलेप्रेमतन
मनधनवारी॥२॥ ७५॥राग तोडी तालधी
मोतितालो॥दिनदिनआनंदकरतरह
त॥ ललनांलालनकेअंगसंग॥टेर॥तो
हीसह।हिलमिलतोहीसह मनकेतरंग
॥१॥ ७६॥राग तोडी तालचौतालो॥अरी
हेजदेषवनेअरसांने॥टेर॥कुसमतसेज
नोरउठबेठे॥स्करतरसमसांने॥१॥ ह
रपनलैकवलवि निरषत॥सीतलस
तस्कषसांने॥ नंददास वल्लुराजेपरस
पर॥अंगअंगपयसांने॥२॥७७॥राग
आसावरी तालत्रतालो॥मेरीअषियनके
भूषनगिरधारी॥टेर॥ बलिबलिजाऊंब
दीलीछबिपर॥अतिआनंदस्कषकारी
॥१॥ परमउदारचतुरचिंतामण॥दरसपरस
स्कषकारी॥अतुलप्रतापतनकतुलसीदल
मांनतसेवाचारी॥२॥ सीतस्वामीगिरधर

नविदसजस॥गावतगोकलनारी॥कहा
वरनांपुनुगाथनाथके॥श्रीविठलहिर
दयविहारी॥३॥४८॥राग आसावरीता
लउ लालो॥हौंबलिबलिजाऊं तिहारेहो
ललनां॥आजमेरैकैसेहोपावधारे॥टेक॥
कोंनमिसआवनोवन्योपीवमेरोजागेहे
भागहमारे॥१॥अबहीकहानवछावर
करहो॥सुंदरनंदकुमारे॥नंददासप्रभु
तनमनधनसब॥तेपेहलेहीउवारे॥२
॥४९॥रागगूजरीतालचौताल॥उन
तनारलाजजूकेसंग॥कंचुकीकसत
राधिकाप्यारी॥टेर॥किसकिसपरत
नीलपटसिरहीतै॥सिसवदनीनव
जोबनवारी॥१॥मनभावतेलालन
गिरधरजूकी॥रचीहैविधातासोहस्व
संवारी॥जेश्रीनटस्फरनरंगनीवै
प्रियासहितदेषेव्रजविहारी॥

रागसुजनीतालझपतालोप महीकोथम
कोहेय । तुमगिरधरनाचे । महीकोथम
कोहेय ॥टेर॥ कटकिकनीथंनवन्दूप
न्हे१रा॥ सहजमिलेस्करहोया॥ ह्ेषत
नेकेंहितनहीआवे ॥ उपमाकोइजोन
ही कोय ॥ सुरनवरकोतिवरनिसाये
रहेस्करनरमुनिजोय ॥२॥५१॥ रागभेर
वीतालझपकतालो ॥ होम्हांरीजोडीरारा
जिंद१नाथेतोह्रवसोराजकूजीहमां
रीजोडीराराजिंद१ना ॥टेर॥ कबकीह्वेवा
वाडीअरजकरांछां ॥ ज्वाबथांपरहीरामो
तीधना ॥१॥५२॥ रागभेरवीतालझपकताले
होम्हांरासांवलासाजनराजा ॥ म्हांन्हदर
सहीदिषाजामांरासांवलासाजनराज
॥टेर॥ कलीकलीदिषानेलीअरजकरे
छै ॥ तुमसरंस्याछोकिणकाज ॥१॥५३॥
रागभेरवीतालझपकततितालो ॥ काइजो

गुनौ म्हे थांरो कीयो छै। मांनै मिल्याय दो साहिबा हो राजा॥ टेर॥ कोटी बोंदेस्यां ज्वारी बूंदी बी देस्यां॥ थांसू ल्लगपो म्हांरो काजा॥ १॥ ५४॥

राग भैरवी ताल तिताल्लौ॥ साथीडा म्हांरे साथ निभांणा॥ हम परदेसी मुल्लक बिरांणा॥ टेर॥ इस दुनीयां विच वे आंवणा बीजांवणा॥ मेरा प्यारा॥ अपणा सो अपणा बिरांणा सो बिरांणा॥ २॥ ५५॥ राग भैरवी ताल तिताल्लौ॥ आदम आदम आदम दम दम दा॥ इह दम जुग विच कुकररमदा॥ टेर॥ बाद मगरूरी छोड अपनी नमग नाल मेरा सांपणा॥ इस दुनीयां विच येही लाक मदा॥ २॥ ५६॥

राग भैरवी ताल तिताल्लौ॥ सांवला कौ दरस दिखावो मेरी सजनी॥ सांवरो है कांमण गारो मोरी सजनी॥ सांवरा कौ दरस दिखावो॥ टेर॥ इन दुख्यां विन कल्ल न परत है॥ इनही कौ गुन गावो॥ २॥ ५७॥

वीतांजथीमैतिताजैा।जरदछुपरावा
नानीसांवला।टेर॥मोरमुकटपीतंबर
सोहैगजमोतनगलमाला॥१॥५०॥रा
गनैरवीतांजयंततिताजैा।मेतोअ
ईयांक्यातकसीरमैकेसाजनां॥मेतोअई
यांकीतकसीर।सांकीपीरनप्यारोहोज
णदा॥टेर॥कबकीमेवाटोगढीअरज
करांछां॥प्यारौमैकेहिलकाजांणदा॥
१॥५१॥रागनैरवीतांजथीमैतिता
लै॥हमसेजोराजोरीबे।दिलदमेहर
ममास्डामिजाजीडा॥टेर॥दरदेख्यां
विनकलनपरतहै॥पियाचढरहमजे
रीबे॥१॥५२॥रागनैरवीतांजतितोलो
॥मनमेरोमोह्योरेइनवंसीवारेनैमनमे
रोमोह्योरे॥टेर॥मोरमुकटपीतंबरसोहै
श्रवनकुंडलछविसोह्योरे॥१॥५३॥रा
गनैरवीतांजयंततितारी॥आजम्हारैश्री

जो दीसांवलाजी थे तो आज म्हांरै आजो ॥ दे
रा ॥ फूलडी रतनजडाव कीलाजो ॥ रंगर
संवा तवणाजो ॥ १॥ ६४ ॥ राग चेरसीता
लजल ६ त्तितालो ॥ म्हांनै प्यारो लागे छे
सांवरो बबालो हो म्हांनै प्यारो लागे छे ॥
टेक ॥ रूपसागर अघहरन कृपाकर ॥ द
रस कीयां दुख लागे छे ॥ १॥ कंवसरी दु
लरी हारन की ॥ किसरीये रंग वो गे छे ॥ १
रदास चलूं चनके सरणे ॥ लाग हमारे जा
गे छे ॥ २॥ ६२ ॥ राग सारंग ॥ ताल चौता
लो ॥ नैनन नीदगई री आली ॥ निस दिन
मेरी छतियां लपी रहे धर की ॥ टेर ॥ जब तै
मोहन मुरली बजाई माई ॥ सजनर हार
कबू ॥ और देहत मोहि धरको ॥ १॥ नंन
दीउ सासचित ॥ निस दिन गारी देत ॥ स
सतक तमेरी पायन को घरको ॥ कैसै
कजईये कैसे दरसन पईये ॥ ललकलं

नगिरधरकौमेरोहाथजयोपातरतरकौ
॥२॥६४॥रागसारंगतालचौतालो॥
बैठेहररराधासंगाकुंजजवनअपनेरंग।
करमुरलीअंधरधरेसारंगस्वरगाई
री॥..मोहनअतहीस्वजांन।परम
चतुरगुननिधांन।जांनबूझएकतांन
चूककेवजाई॥१॥प्यारीजबगह्योवी
नासकलकलागुनप्रवीन।अतन
वीनरूपसहितवेहीतांनस्वनाई॥
वल्लभगिरधरनलाल।रीझदई अं
कमाल।कहतभलेभलेसुंद
रस्वखदाई॥२॥६५॥रागसारंगताल
चौतालो।मेरेबलदोमचोरको॥टे॥
इकबलहेमोहिहरनकनको।दजोबंद
किसोरको॥१॥मनवचक्रमकरनमही
मेरेनांहिनरोसौऔरको॥श्रीविठल
गिरधरनकृपानिध॥वहजनकुलसिरमो

रको॥२॥६६॥राग सारंग ताल इकताली॥ऋ
रीझन लोगन कोकाहा कीनो मैं अपनो म
न न्यावन दीनो॥टेर॥मन दे मोल लयो रेस
जनी॥ऊ मैं मन न्यावन नंद दुलारे नव लल
न रंग लीनो॥२॥६७॥राग सारंग ताल चव
ताल तिताली॥परन लागी यो बविरषवा सो
बलमा मोरे यह संतगवनन कीजिये॥टेर॥
हरे हरे सत वाके पंख बनाए। तिन तिन ब
ट स्कब लीजिये॥१॥६८॥राग सारंग ता
ल चलत तिताली॥ हेरी माई कांन दे सक्रां
न नगर वां जाय वसे र वा जहां मेरा पीव
र वा हेरी माई कां न देस॥टेर॥ लिष लिष प
तीया पिया जू कू मेलू॥ बायर है वा कू देस
॥१॥६९॥राग सारंग ताल तिताली॥आ
नंद आज वधावनो मेरे घर॥आए मेरे
पीया हो सुरजन वा॥टेर॥सगरी सषी मिल
मंगल गावो॥मोतीयन चोक पुराइ लीनो॥

रागसांवतसारंगजंजइकतालो॥ होबि
रईयांकीछांही॥ पियाजगवनकीयोवि
देसअंबरईयांकीछांही॥ टेर॥ बनजी
विराज्यामांरा बागमेहोराज॥ किणविध
देषणमेजांई॥ १॥ ख्याल राग सारंग सांव
तताल इकतालो॥ वारीहजवरारेहोव
रीहजवरारो कंथाम्हां रेआज्योबारणे
होवारीहजवरारो॥ टेर॥ सगरीसषीमि
लगईवाकुदेसवा॥ काचीकलीयनजन
छेडेरे ॥ १॥ ख्याल राग सांवतसारंग ताल
जतइकिताला॥ हेगुमांनीम्हांराबीरम्हा
रेबीरम्हा॥ टेर॥ जोहैतोसादीतेरीबनी
होकबांणबे॥ सषीयां तोम्हारी तेरीन
रणां॥ १॥ ख्याल राग सांवतसारंगताल
इकतालो॥ पसरोबंगलोछवायदेहोम्हां
बनाजीम्हांनेपसरोबंगलोछवायदो॥
टेर॥ ओरषसीरकोबनीरावटी॥ जान

फरोआ जगायदो॥१॥८४॥राग सारंग जु
हर ताल इकतालो॥ मांहीसूं होनेहड लो
निजाजो हो पनामासूजी राज मांहीसूजीने
हड लो निजाजो॥टेर॥ कनीकनी हथा
नेणी अरज करें छे॥ इकवार मेहलां पे आ
जो॥१॥८५॥राग जुहर सारंग ताल इकता
लो॥ वेगा ने पधारो म्हांरे पांवणा होब्याल
डा लाल॥टेर॥ आछे जग मिंदरां थांरे
बेसणो॥आछी आछी जनाला यारी मेंजरें
॥१॥८६॥राग जुहर सारंग ताल जलद
ति तालो॥हो म्हांरे पनाजी रे दुपटो दीजे हु
दर जण म्हांरी अंगीयारे हवादे॥टेर॥हो म्हा
रा कांनां ने झाल घडावजो॥ म्हांरी वेसर
रतन जडावो हो॥१॥८७॥राग जुहर सार
ग ताल इकतालो॥पनाजी ने केजो हो न
न आजो म्हांरे पांऊणा॥ देसा ती ने केजे
हो नल आजो म्हांरे पांऊणा॥टेर॥

घाटी तो नगारा रे म्हां राह जो म्हांरा हेस
एपा । हेजी कांई छा परस्नुं रन क्याछै सेन ॥
७८ ॥ राग मल्हार जंगलो ताल इकतालो ॥
कांनजी कांमणगारा थे तो म्हांने वाल्हा
लागो राज ॥ टेर ॥ बारी ३ पेरी क्रंजां म्हांही
पांस्हु म्हांरो काज ॥ १ ॥ रंगरंगीलो छै लछ
बीलो छोगालो सिर ताज ॥ हज निध म्हां
रे मन मे वसीया । आघा पधारो राज ॥ २ ॥
७९ ॥ राग मल्हार जंगलो ताल इकतालो ॥
गुमांनीडा परदेसन जा । सुमर वरसे ल
पांणी ॥ टेर ॥ चप चप पांनी पग पग पांनी
। अरज करे छै थांरी हथाने ली ॥ ३ ॥ ८० ॥
राग नट ताल रूपक तालो ॥ प्रीतम प्रीत हो ते
पईये ॥ टेर ॥ जद पिस्तु परगुन सांनसुघ
रता । इन वातन रिझइये ॥ १ ॥ सतकुल
जम नवीन सकुल छन म्यां श्रम तउ रान पट
ईयै ॥ गोविन्द जन्म हुविन सने इसवा स्तु ॥

रसनाकहानचईये ॥१॥८२॥ राग नट
तउताला ॥ नासों मांनकी जियेजो। आ
पकरत है निहोरे ॥टेर॥ रसकेरसीलेला
ल॥ रससोंकरतष्याल॥ ज्वारेंलाषकि
रोरे॥१॥८२॥ राग नट तालउताला ॥ म
धोमाधो नांवली जियेजो। बोहतकर
त हेनोहरे ॥टेर॥ आंनगहेगे केसहृतज
व॥ फिरपिछतावोगेबोहरे॥१॥८३॥
राग नट तालउताली ॥ कांनतेरीमुर
लीनेकबजाऊ॥टेर॥ जोहीजोहीतांन
सुनतरेसुषकी॥ सोहीसोहीगाय
सुनाऊ॥१॥

॥२॥८४॥ राग नट ताल
उताला॥ आजवनवनलालनआए
तेरे। मांनकरनाबावरे ॥टेर॥ जदपि

वो हनायक कहून मन न्अट कोरी ।। तिर
गुन रूप मोही तातै तोसे हैरी न्वर ।।
।। ऐसे सेरी लाल न परत न मन धन द
जे ।। समझ सयांनी घरी घरी घट न बि
न्नोवर ।। इती के वचन सून श्रम मग
तन्नई मिली रीगो बिहरी न्हूस रासी वंध
स हाग दांवर ।। रा: ८४ ।। राग सिंधवी
ताल चलत तिलाबो ।। राजयां नैजां
ण्पा हो राज यां नै जां ण्पा ।। टेर ।। टीकायेच
न जी म्हनै णं ।। राज यां रा अड वड
बोल पिछां ण्पा हो राज जां ण्पा ।। १ ।। मध
उकीया मा हा राज राज वी ।। राज यां र
सिजडी यां रंग मां ण्पा हो राज जां ण्पा ।। २ ।।
८४ ।। राग सिंधवी ताल चलत ति ता
लो ।। म्हां नै प्यारा रा न्नागो हो राज न्नागो
। राज घां रा पाघां रा पेच सवा रो हो ।।टेर
। राज यां रा सनी दनै णं ।। राज यां
महब कन्नस्या उनी दनै णं ।। राज यां

रीकेसरीयांधूमालौफूलांनारैहोराज
नारै॥१॥८७॥रागसिंधवीतालधीमे
तितालौ॥मांहरैमैहलांआज्योहोराज
आज्योहो राजथांरीप्यारीजीकहैछैर
गलाज्यो॥टेर॥गजमोतनकोबेसरला
जो॥राजम्हांनैलौडीलागीकैहवतलाजै
हो॥१॥८८॥रागसिंधवीतालधीमोति
तालौ॥म्हांरोमनमोह्यौहोराजमोह्यौ
॥राजथांरौकेसरीयौलपेटौमनमो
ह्यौ साथीडांरीजोडवणीअत
नारी॥राजथांरैगजमोतीगलसोहै
होराजमोह्यो॥१॥८९॥रागसिंधवी
तालधीमोति तालौ॥राजम्हांरीमां
नौहोराजमांनौ॥किणओगुणथासौहो
पनाम्हांसूंरीसणौ॥टेर॥

तन॥ मधकर ताइ मुषवेन॥ तजल चीरपरमल
धरे॥ लाजवंतकै नेन॥ २२॥ छपै॥ चंचलचपल
अतिस्यांम नेन मृगकुटिल भ्रकुटि वर॥ तिल
कमेदसुकनास त्रिवलीज हिंहि इकंवतर॥ वच
नगमन जिहहीन अंगकोमल विचत्र अति॥ त
नसुक्षम कटि षीन प्रगटदांमनी दिहदुति॥ अ
नेद चंदवरनन वदन सदा अंग निरमल रहे॥
आहार पांन अषित अमल विमल वेर बेवे चहे॥
॥ २३॥ सवैया॥ बालसी वेस रहे सबही दिन॥ मांन करे
अति ही कुलाजे॥ स्वेत सरोज हिहे तधरे अति
उजल चीर सरीर हि छाजे॥ वारज को सव सोरह
कांमति बीरज नीरज वासु विराजे॥ दिह जही गुरु
निराजे॥ २४॥ अथ
अनंद तिरंना के रूप पदमनि राजे॥ ... अथ
चित्रनी लछन॥ दोहा॥ चित्र रूप समा चित्रनी॥ अ
ति विचित्र सरीति॥ चितलावत सब कांम तजि॥
निरष चित्र संगीत॥ २५॥ न हि न्नीराडुरवलनहि॥
लंघदीरघ नहि अंग॥ अति विचित्र ताइ चित्रनी
लोचन चकुरंग॥ २६॥ छपै॥ अमल कमलद
लवसन नैन चंचल अनीयारे॥ मधकर मुष वचे
नचासकंचित कुचकारे॥ लघदीरघ नहि अंग
सरबतन गरबजनावत॥ दयावंत अति हित उ
पपरमल बजनावत॥ ग्रीवा कपोत एुघट उरि
य गतिगयंद आनंदजिहि॥ सीलवंत को बिचि
त्र अति कदलि षंभजगजंघ जिहि॥ २७॥ सवे

या॥कामकोधांमवन्यो॥अतिसुंदरवारकोनांमन
हीसंगजाके॥वरछुलहोयनहोयसोदीरघवासम
नोमधकेवपताके॥चाहनहीचिरलोंरतिचित्रणी
हेलछणएसवलछणवाको॥रांमरूपाविनकांमको
लकोऐसीयोनामनिधांमहेकाके॥२८॥अथ
वनीलछनं॥तनदीरघदीरघछुजा॥करपददीरघ
नांम॥चलतचालउचालअति॥जांनसंषनीनांम
॥२५॥संषनिकसकरकसवचन॥दीरघउरवलदि
हा॥निहचेअविलंवतचलत॥जांनसंषनीएहा॥
२०॥सवैया॥लघलोचनअरुकुटिलग्रीवपिव
दीरघनारी॥सहपीनतनरहेजठरकटिजाकोना
री॥कुचसुखममनकुटिलअधिकतामसतिहि
कामनि॥अरुणकुसमपरिवंस प्रीतचाहति
तिनामनि॥उरमहिलपटतिरतिसमेअरुक
नावतहटकीयो॥सुरतकरतहारतनहीसेन
योचाहतहीये॥२९॥सवैया॥प्रीतकीरीतनजांन
नेकहुकामकिलोलकोंआतुरनारी॥पिनद
कीवानअजांनसुधाउरकंदपीजो॥निकुवासकु
मारी॥काहुसोंनेकमयानकरेसवलछनहीनइहे
नधारी॥पापकियेजिनकोटिकदूरवपावनसोन
ऐसीयनारी॥३०॥अथहस्तिनीलछनं॥तननारी
नारीछुजा॥नारीउरजअनंद॥नारीग्रीव
नितंबजंघा॥चलतहस्तनीमंदहा३२॥चौपई॥मद
नमतसदाजोरहो॥आनंदवचननकाहुकहो॥अ

१नी अस्रू तन्ना पशुकोरे ॥ ना जट्टदकोमूलत पारे ॥
अंकुसधर्मकां नग हिमारे ॥ वापलार सबअंग विषा
रोफटअसूजंघकलाईमोटी ॥ करतलहुष्ट अंगुली
याछोटी ॥ निकरवचन अपस्वार थकरे ॥ गुरजनस
कनमनमे धरे ॥ २४ ॥ दुहा ॥ अपजसकीसलताधरे
वहउलंघन हिजाय ॥ पगबंधन अपकृतको ॥ हस्त
न हस्तस्रूनाय ॥ २५ ॥ सवेया ॥ कांम किलोलसमे अ
तिआवर पायजन्ने १ तियावलिमारे ॥ जो निकष
खुटेदोऊफ वाहरही उरवार नपारे ॥ कंद्रपगंध
पगंदवहे इहि न्ने द विचारे ॥ किलसमे पति हारत
वेग ही नेंक न हस्तिन कोमन हारे ॥ २६ ॥ सोरठा ॥ चित्र
णीहरणीजांना ॥ संषनी १३ रंगनी ॥ हस्तिन हस्तस
मांन ॥ पद्म नि की उपमान ही ॥ २७ ॥ षटकरपलव चित्र
णी नव संषनी सरीर ॥ बादश हस्ति निजांनीयो ॥ इहवि
धजोनि गंभीर ॥ २८ ॥ इतिश्री ॥ समाप्तं ॥ अथ
पुरुषजातवर्णनं ॥ दुहा ॥ ससाऊ रंगमहषनहय
वगटकुरषएआर ॥ नघसिघलगलछनसकल
कहै विचार विचार ॥ २९ ॥ अथससलछनं ॥ कलम
कोमलमधुवचन ॥ सीलवंतस्रूपोन ॥ रति विनो
दअतिसचनही ॥ पुरषउससास्रूजांन ॥ ३० ॥ अथ
ऊरंगलछनं ॥ मधुरवचनमृगमधतन ॥ चपल
बुधिचितनीर ॥ चतुरसाधअतिहस्तसुष ॥ कामी
कनकसरीर ॥ ३१ ॥ अथ वृषनलछनं ॥ वृषनना
मन्नारीदुरषातातारूसजाव ॥ कपटी लछनं पट

हगी॥कांमकेिन्नबक्रचाव॥२२॥अथचतुरंगलछनं॥
तनदीरघदीरघचरण॥नषसिषदीरघअंग॥स्क
नरुतरुणसंगहस्चत॥रसीयाअधिकचतु
रुहा॥चतुरषटनवजोंना॥द्वादसकरपद्मववग
॥मदनांकुसपरवांन॥समसाआदजोंनक ॥
२४॥दुहा॥समाउरषपद्मनित्रिया॥समरतिया
नांम॥उन्नैपरस्पररतिवहो॥औरनसोनहीकां
॥२५॥इतितृतीयषंड॥अथसमरतिवर्णनं॥दुहा
हयकरनीहरनीहरना॥वृषनसंषनीसंग॥इन
मनिस्कषकुपजे॥वटैपेमउक्तंअंग॥२६॥अ
उच्चरतिवर्ननं॥सोरठा॥वृषनकुरंगनिसंग॥
वरतुरंगतुरंगनी॥मतवचइनकेसंग॥प्रगट
उच्चरतिजांनीये॥२७॥दोहा॥कुरंगनिसाथ
रषवृषनकरनीत्रीया॥इनकेजनमत्रक्या
॥प्रगटनीचरतिजांनीये॥२८॥अथउच्चरति
वर्ननं॥दुहा॥हयहरनीअतिउच्चरति॥वृ
करनीअतिनीच॥नरनारीतेजोअधिक॥तो
स्कषसिज्याबीच॥२९॥सोरठा॥जेसीजोनिगंभी
मदनांकुसजेसौचहै॥तोस्कषहोयसरीरको
कसारइमउचरै॥३०॥इतिचतुर्थषंड॥दुहा॥
जिहत्रियकोरतिरुचिनहीं॥पियविनसैजो
हि॥नीमनिमुदतनहोयकछु॥वृथासक
यआहि॥३१॥अनरुचित्रियपुरषहिमितौ
हैकौकइमनाइ॥जेसेरोगीनीवकौ॥आंष

पीजाय ॥४२॥ जो जन जानै कोकपद्धि करै सुजत विचार ॥ अत सुष उपजे रवनि कों ॥ रति सुचि मांनै नार ॥४३॥ अथ कामनिवास लेख्यते ॥
प्रथम के वाम दिसि ॥ वसत सदा अंगर ॥
जगाय के ॥ पिय विलसे तिय संग ॥४४॥ दुतीय प
वा बसत श्री मत कांम ॥ तिह कर जदित र ति
नाम ॥ द्वितीया दग चुंबन करत कंत ॥ तृ
सुदित तिय अधर दंत ॥ जब चौथ कांम आवे कपो
॥ तब चुंबन षंडन करि किल्लोल ॥ ग्रीवां पावे
॥ तब चुंबन षंडन देन ॥ सातै
काम मेन ॥ उकु गे र कह्यो नष दांन देन ॥ सातै
र मर्दन करै उरोज ॥ तब वसत आय नेह चैमगो
ज ॥ आठे जु काम [illegible] को इह विचार ॥ कर मरदन
कीजत ता जतारि ॥ नवमी सु नाभि कट दसै होय ॥
करि मरदन कीजत अंग होय ॥ एकादस मनासिज
नग निवास ॥ तहां मदन धाम कों करे यास ॥ ताहि
त जो कीजे बकुव संग ॥ तव द्वैत सुनि तब ह
अनंग ॥ द्वादसि मनोज तिह जंघ संग ॥ रति र
वन त्रयोदस गुल्फ संग ॥ चौदस कों चरण करै
निवास ॥ अमावस पग अंगुष्ट वास ॥ कर मर
न कीज त ताहि तारि ॥ इहा विध जु रुच्च उप
जहि विचार ॥४५॥ दोहा ॥ अमावस परिवा विन
ना पद अंगुष्ट अनंग ॥ जिह मग तें सौ रातिर
वन ॥ चढ त चल्यो तिह अंग ॥४६॥ कृष्ण पक्ष को
ज्यादि दि ॥ सुकल पक्ष विध जानों जं चाहि तै ति

तिथनिरखके॥अंगकीयापहिचांन॥४८॥ मंग
लाबंद॥ ॥१६मनीपरिवाइजपाचेचौपचाहे
चोग॥चित्रणीआवेबविदसमीक्षादसीसंयोग.
॥संघनीसातैतीजतिरस्त्रग्यारस६९तमनोज
॥हस्तनीक्षमीनवमिचौदसवचनविकतचोज ॥

१	१५	मांगमध्येनम्रदांनकरण
२	१४	मावीआंषचुंवनकरण
३	१३	अधरमध्येषंदनकरणं
४	१२	गात्वचुंवनकरण
५	११	कंठमध्येनम्रदांनकरण
६	१०	कापमध्यमरदनकरण
७	९	कुचमर्दनकरण
८	८	उरस्थलमर्दनकरण
९	७	नाभिमर्दनकरण
१०	६	कटिमध्येमरदनकरणं
११	५	नगमध्येवहारकरणं
१२	४	जंघमध्येमरदनकरणं
१३	३	गुल्कमध्येमरदनकरणं
१४	२	चरणंमरदनकरणं
१५	१	पगअंगुष्टमरदनकरणं

॥५३॥निसविचमरतिपदमनी॥जांनचित्रणी
जांम॥वीतीनिसविधसंषनीहस्त

रांम ॥ध्रा॥ इति नवम भेद ॥ अथ स्त्री भेस तथा ॥ कं मा गोरी सम फके ॥ बाला तरुणी जांन ॥ प्रौढा वृधा नांमनी ॥ एव रट वैस वषांन ॥ ५५ ॥ अथ ॥ सात वरष पर जंत सु कंमा जांनीये ॥ ता सो कांम किलोल न कबहु गांनीये ॥ बालापण को षेल सदा मन ल्यावई ॥ फुनि हां ॥ कबुह कलोक विलास न मन मे आवई ॥ ५६ ॥ आठ वरष ते गोरी तेरह के तले ॥ चाहे चतुर षिलोना सुंदर अति भले ॥ जोजन विलसे तास अधिक सुष पावई ॥ फुनि हां ताको अधिक विलास न कबहु ल्यावई ॥ ५७ ॥ बाला तेरह आदि ऊ बीस ह के तले ॥ चाहे पनव स्नान सुसार ने अति भले ॥ तासो कांम किलोल हेत जो ल्यावई ॥ जीत वडे हु सु और महा सुष पावई ॥ ५८ ॥ तीस वरष पर जंत सु तरुण कहावई ॥ भूषन चीर अनूप ता हि अति ल्यावई ॥ तासो कांम किलोल हेत जो ल्या वही ॥ ष्टरण वृ म आनंद परस पर पावही ॥ ५९ ॥ चालिस वरष ष्ट मांण सु प्रौढा नांमनी ॥ चाहे और कबू रेमंत जि कांमनी ॥ जोजन कांम किलोल ता हि संग ल्यावई ॥ फुनि हां ॥ चाव अनेक सो ता मिनि ता हि रिझ ई ॥ ६० ॥ फुनि वृधा त्रिय होय श्रवण सुण लीजीये ॥ तासो कांम किलोल न कबही कीजीये ॥ चां मानि पोरी जीत बोहत करमांनीये ॥ फुनि हां ॥ आपन वेस विचार आप जिय जांनीये ॥ ६१ ॥ दोहा ॥

हा।जोमनभावैनामिकौ।पवैदेहिसौताहि।अव
वतहितचितरुचिवढै।करैप्रीतनिरवाह।
।।५७।।इतिपद्मबंध।।अथनारीपरिछा
।।द्विगुनक्षुधाकामनिजवरामन
हवषटगुनहोय।।मदनअष्टगुनलाजदस।।ति
यथहविधसवकोय।।५८।।अथविभचारणि
लछन।।कुरवेसरवदोविभचारणसंगरहैजोका
मनि।रहैसदामायकेभाजनि।।वहुधरमन
मैनारीरहै।।तासैशीलकोकइमकहै।।५९।।
विरक्तवतीलछनं।।दोधकछंद।।उतर
वेगनदेकवरूपतिकैमुषवोरनवांमनिहारै
।।पौढैपीठदयैपतिकैसंगचुंबनकौमुषपौछ
केमारै।।जौपतिकौकोऊआवतप्रीतमडरज
नसोअपनैजियधारै।।लछनएजिनप्रेमनजै
प्रीयछिनहोयसोनिहविचारै।।६०।।अथअ
नुरागवतीलछनं।।छपै।।हगभरिनिरषतनिति
लजहसतकुलुअंगदिषावत।।विनमुषदेत
उधारविनकमुषदेयडुरावत।।चलतथकत
ऊयरहतचरणआभरणसधारत।।करक
टाक्षमुषमुदितप्रगटलटकटीसंवारत।।
पलवचपणउहवीषनतप्रियनिहारिकस
तकुच।।अनुरागवतीइहिविधिरहिप्रीतर
तजिहिअधिकरुच।।६१।।अथकामावती
लछनं।।चितवतकरगहि

रदनन्नारिसि॥ अधरआपरुचिगहितं
गबजदेषत आरसि॥ सषिकों अंकहिनर
स्फकर१ह्यवचमकावत॥ दोरपोरपेआय
विचितफिरिचक्कलावत॥ प्रतिजंन्नातवि
नसमेचितकंवजस्फऊचलकोकरत॥
चलऊरोजटं१तनही मदनमत्त शहिविधिर
त॥ दूहा॥ अथ कामावती लछनं॥ ॥जब
वनमदमत्त कंतविबुस्यो चिरकालहि॥ काम
निनए व्रस्तदेतजलनिजनालहि॥ उष्क
तीजवतरुणिमासदोयवीचतजातन॥ नो
नगर्भनिवासकामबकुमा१ततातन॥ दू
॥ क्रवती लछनं॥ दोहरा॥ नैनन्नमावेसिथल
तन॥ कहेस्फकं१तबेन॥ कलिकलाइबूटोच
हे॥ जबहिद्रवहितियमेंन॥ दूहा॥ अथ नारील
छ॥ निलजक्ररबोलत अधिक॥ अतिता
मसअतिहास॥ कहेकोकवहतरुणिको स
कलकलछनतास॥ दूहा॥ जाकीजुगत्तांहेजु
री॥ ऐसीजो त्रियहोय॥ कहतकोकवहऊदि
लमत॥ नादिन१तीयाकोय॥ दूहा॥ तनकं१त
मारगचलत॥ चषपिंगलउरवाल॥ जहांतहां
उमदेषीयो॥ विलचारनवहबाल॥ दूहा॥ गिरतर
वरसरिता विहंग॥ जिहिनषत्रकेनाम॥ उगत
जुगतमैदेषीयो॥ विलचारनवहवाम॥ दूहा॥
जिहकैपगअंगुष्टि घटा॥ उ१गाजोवटिहोय

साहत ही पति कौं हरै ॥ कृपन न साहै कोय ॥
॥६०॥ जा की नासिका नीर न हि ॥ अंवल होय जिहि
रूप ॥ निसचै होय दरिद्रणी ॥ जद पि संग्रहै भूप
॥६१॥ दीरघ होय अनामिका ॥ उपमा ता तै हीन ॥
ता कौ पति जीवत रहै ॥ वरष दोय कै तीन ॥६२॥
कृधावती निद्रावती ॥ सोगवती सी नांम ॥ उच
कै सर सनां कठिन ॥ कबहू न पावै धांम ॥६३॥ अ
ति लघु अति हि विसाल तन ॥ अति लंगर स
होय ॥ ता तिय कौ अपनाय कैं भूलन दीजो कोय
॥६४॥ कपोलन इक लीन कुच ॥ अधिक लीन कछु
अंग ॥ वात करत ति हित साणिके ॥ फूल न तिय
वउतंग ॥६५॥ रोम होय सब गात पर ॥ चलत चा
लउतावल ॥ अति दुरबल अति छीन तन ॥ सोभ
न पावै बाल ॥६६॥ जा के कुप क पोलन पर ॥ बालक
हत होइ जाहि ॥ तात मात तिहां तरुणि के ॥ नि
सचै जीवै नांहि ॥६७॥ अधर पांन तालू रसन ॥
दसनन ऊपर स्यांम ॥ उच्छ दंत दीरघ अधिका ॥ रां
ड दरिद्रण वांम ॥६८॥ जा के अधर विसाल अति ॥
बोलत सदा कुवैण ॥ ए नारी न हिव्या हीये ॥ नि
रख पर बहु गुन नैण ॥६९॥ इति सप्तमप्रकर्ण ॥ विर
हेद्र ॥ कुंडलिया ॥ जो न हि जानै प्रीत गति ॥ र
है मलिन सो नित्र ॥ पतिया रौ तिहि नां परै ॥ छूट
मुराधे अति चितर ॥ वचन मुख दुष्ट कनावै ॥६ ॥

कविनरू१०अतिहोय पायनहीआपववांचे ॥सोगवतीसीरहे वातनहिमुदितरूमांने॥ वीत हरंण तबहोय जीतगतजोनहिजांनै॥८०॥दुहो॥पि यनागररूरव त्रिया॥ त्रियनागरप्रियरूरा॥प नवचउरूंकेनांमिलै॥हियवीतरूचहूर॥८१॥ इति अष्ट प्रसंग॥अथचतुरसिणगारवर्णनं॥दो हरा॥अतिउत्तम तनवास चीरपरमलसंगधा रत॥पांननिआंननिअरूणराग छिन रंजआर तार तन कनक उरमाल हास्य वचनन मुषना सत॥मनउदार तावहुत केसनांवेअतिआ सति॥आनंद तरूण चितहित वढत इहवि धजोकांमीरहत॥मनुहरनहरंण्पतन कामन करूउपायइहविधकहत॥८२॥अथदूतीवर्ण नं सोरठा॥नृपति मंत्री हीन॥दूतीविन कामीपुर षा॥एतेरूतेरहतीन॥कोकसारइमउचरे॥ ८३॥छंदभुजंगी॥सषीमालनीग्वालनीयोचिते री॥नटीनायनीधोबनीधाइचेरी॥रूसंमास नीनाटनीबालनारी॥ तंबोलणी त्रियाएदुति काविचारी॥८४॥इति दूतीवर्णनं॥अथदीर्घकि रणं॥दोहरा॥सिववीरजलोहहनो॥कनकसु तांवाहोय॥चारोधातरूधातकर॥ षातिरसिकसवकोइ॥८५॥वयवृद्धतआमि षमोचरस॥मिरचमूसलीस्यांम॥मधुमुंगी

...न॥ लघु बुधी अति निरांम॥८५॥ सवा हे
नी गुड उडदा जो क्रंपी परवंत॥ कौच बीज यो था न
कौ॥ परमल पां निजि लोहा॥ अवर कछू जिल मलौ॥
धान सबन मै होइ॥८८॥ उदनो राज॥ नहलन उष
नौ मरै न एक बेर पाईयै॥ मंगाय माल कांगुनी सुधा
मै जु नाईयै॥ टांक दोय मांन जांन पान उषा
ईयै॥ कांमनी॥ किलोल तै अनंद कंद पाईयौ॥८९॥
हा॥ धातव धारन बल करन॥ हम सु है जो कोइ॥
१ यसमांन तिकुं लोक मै॥ अवरन उषध को
॥ रति की अंत ज पय पियै॥ घटै न बल तिह अंग॥
अथ स्यंनन॥ मुसीइ सफन जायफल॥ जावत्री
अहिफेन॥ विजया अजवायन ऊर्तै॥ सातौ पं
नमै न॥९२॥ व१थ॥ सिकेसर द्विंग लोंग सं
जातिफल जांनत॥ विद टांक अहिफेन टंक दो
इ मगमद मांनत॥ सकल पीस इक बेर साथ
बिनइ कउवटाव त॥ गुंज दोइ परवांन जांन
वटी वनावत॥ आनंद पीन पांनन सहित वटी ए
क नष तउरस॥ नबलगमनो जमु चतन नदी
बलगन षेन अंमर रस॥९३॥ सोरग॥ चउ ...गुज
हिफैन॥ एक टांक हरि वद्ने ना॥ रहै थाकि तजौ मै
॥ जैसौ वारि हरि ज्ञ सरद मै॥९४॥ अथम
क कांमे स्वर विधि॥ दोहरा॥ आ[illegible]

खा॥ बरजत अजमोद अनंद॥ हरखहरे आवे सो
सूव विहरी कंद॥ ८५॥ चनीया मोथा मोचरस॥
गजपीपर अग्निराम॥ सिखर गारखजर फल॥
लमसली सांम॥ ८६॥ मिरच कायफल गोखरू॥
पीपी जजआंनि॥ धतूरासूव तालीस तज॥
रसुजांन॥ ८७॥ सूके बीज अनार के॥ जीरासेत अस
त॥ चित्रा चाउं गी सुकनग॥ कौच बीज सौंले त॥
॥ ८८॥ मजुलिठी पंकज गटा॥ नवल सिंगोरे जांन॥
कुलथ काकडासिंग घृत॥ नाग केसरी आंन॥ ८९॥
उह करसूल सितावरी॥ उषध गुण तालीस॥ टांक
र सब आंनि के॥ अति सूख म करि पीस॥ ९०॥ नै
ग चिरांजी जायफल॥ गीरी बुहारा जांन॥ दाख दा
ल चीनी नवल॥ अरु एला लघ आंन॥ ९१॥ ई सफ
द जावंत्री ललित॥ टांक रले आउ॥ एह सउषध
पीसके॥ न्यारा अनतर षाउ॥ ९२॥ तौ पीइ पांचसेर
गा दुग्ध मंगावौ॥ निरजल ल्याजन मैं उवटावौ॥ ल
गी आध सेर रहे आवो॥ बसन बांध पे मैं छिटकाे
वो॥ ९३॥ चंद्रायणी॥ दधि समांन जबहु षस गाढ
नि हरि ये॥ बिजीया बसन समेत निकार सुक
रिये॥ औषध आस गंध आदि सकं आनि रलाइये
॥ फुनि हां॥ पावक मंद विचार रषकाइये॥ ९४॥ दु
॥ पयमे पयजब सोषिहे॥ वारू समकु य जाय॥
लोंग आदि औषध सकल॥ तामहि देकुरलाय
॥ ९५॥ तुय पर धरौ उतारि कै॥ जब वह कछु कसि

राया॥टंक जुगमस तवीस तब॥दीजै षांड रलाय
॥१०६॥फुनि विवेक करिकै सकल॥मोदक जीयवि
लास॥नांम तास मोदक मदन॥सुंदर मधुरसवास
॥१०७॥धातकरन अरु बलधरन॥याहकै मनसज्ञा
नीरा॥अंग अंग पावन दुषहरन॥तियजोवनरति
धीर॥१०८॥इति मदन मोदक॥अथ छंद गीता॥
॥ हंताक १ क सुस्वेत महि द्वै टांक पीपरमारियै॥
तिसलायकै पंछोलज्ज १२ मूंदसवारियै॥पावक
मध्य १ काढ पीपर काढि गंधक कावढ़ी॥उबध सं
स्मरण करि सु स्मरण भीन अंबर बांनई॥फुनि अ
धटांक रलाय मधु सौं लिंग लिप सुकीजियै॥नि
जमन हि अत अनेक उपजे॥तरुण को सुषदीजि
यो॥१०९॥सोरठा॥द्वैन जब लग नारा॥तब लग सुष
पावै नहीं॥लीजो चतुर विचारा॥रीत एक नरतरुण
की॥११०॥सहत सुगुड आंन॥पुंस सो फुनि लरस
आवो॥रतिकर कमल निजावै॥१११॥दूहा॥कंचन
अरविंब गुंजरा॥उरगलता कै संग॥रचन
बावै रवनको॥निसचै द्वै अनंग॥११२॥कीट है
यजे सरदक्रिउ॥वनमे तास निवास॥अधिक
फैन सुष तैं तजे॥तिनपर ताको वास॥११३॥करै
बिरोली कै नमहि॥मारै कीट निकारि॥माल
वैल संग दीजियै॥द्वै मदन जल नारि॥११४॥ज
थम काम कि नौल बाल संग चिरजो कीजै

× नारीस्वतिविहारको। उरषजवहित तकाल। होस्रओ
रअतिरुचिरहै। मुदित होय तियबाज॥११८॥ ×
॥ मदनसदनको दत्तन कादि कृत्त ताते। दीजे।
बिनऊपर। बिन हिव चतुरअति चपलचला
वत॥ ऊपर हिव चलाय। बिन कन्नीतरपैगव
त॥ जो तीन बार ऐसो जतन करि अनंदको
नीकरत॥ कांमन मनोज निश्चे द्वेकोंकरा
रह रुचुरत॥ ११५॥ कृता॥ जो कामी को मदन
जल॥ निकट न पकुऔहोय॥ तौतियएकजत
नकरै॥ जांने चतुरजकोय॥ ११६॥ सारठा॥ कांम
नअपरोपांण। सहरावै वियजंघजुग॥ जतन
स्फइहविधजांन॥ हितजावै रवनीरवनको
॥ ११८॥ अथस्थूलीकरणं॥ जोजनकोरतिनीव
॥ नहीं टपतितकीतरुनि॥ हित नहिइहरु
वीच॥ करैस्फअस्थूलीकरण॥ ११९॥ गंगेरवाव
नरफल औगयंदपीपली॥ इणजु सम आसंग
ध आंनीयेवचाजली॥ समानुजबनुआंनके सु
लिंगलिपकीजिये॥ वमोस्फलावसा जिकारि
कोआनंददीजिये॥ १२०॥ साहितजरीरापंडुसर्व
सम आंनीये॥ अतिस्फषमकरिपीसवसनमा
हि छांनीये॥ मालकंगुनीतेलएकसम वानीये॥
मदनांकुसगुरु होयलेपजो वानीये॥ १२१॥ कु
॥ स्फरतसमैकामीरसक॥ आंनिरुधिरतम
चोरा॥ मदनांकुसमरदनकरै॥ अतिदृढ होय
कगेरा॥ १२२॥ कनककरिपु चंबेली

पत्रचंमसें लीजीयै॥ मनसिल अरुकुवपयु
ष एकत्र करीजीयै॥सककरसमपीसतेलता
मेरलावै॥ अगनमैअरटायताकुछिनबांननिठ
नावै॥२३॥ ॥अथ मदसाकलतेल
वनायस्कलीजियै॥ मदनांकुसकोमरदनकीजि
ये॥अतिगरिष्टजोरवरकराईयै॥ तरुनीसों
हिलमिलकैमन हिमनाईयै॥२४॥ बंदपधरी
॥ जौबाइजायकलसदाजांम॥ संकोचन होइजु
मदनधांम॥तौकामीपावैकुलास॥ मनुतिया
वरबद्वादसविलास॥२५॥सवैया ॥ कुमदारि
मलालमंगायकेनामनि तनतोहसोबंदकरै॥ व
नपुरातनचीरकेसंयुत तांबैकेलाजरवीचधरै
॥ थरपावकऊपरताहिपकायके अंबुजओंति
हलंगनरै॥फिरलीजीयेअंबरसोंदकैसंबसू
मंहस्ककाएतेकाजसरै॥२६॥चंद्रायण॥पोरै
सोअंबरफारिबिरंगहिधारीयै॥जोलीजैतिह
माहितताहिनिकारीयै॥संकोचनअतिहोय
नसंकाकीजिये॥ फुनिहांवाटैकेलिअनंद
महास्कलीजियै॥२७॥सुस्कविर्यविध चौपई
बिनमैंधातजातजिनहोइ॥रतिरंचकलवै
जुसोइ॥सोकामीइकऔषधकरै॥जवैनवेग
धातुनहिपरै॥२८॥चंद्रायण॥पास्योलोहा
दसटांकसूवसमलीजिये॥मिश्रीजनैष्पमा

ण एकत्र कीजिये ॥ दिन इकीस बात जो जिन
इ है ॥ फुनि हां ॥ परे न वीर्य बेग धातु नहि जाय है
॥१२९॥ अति करे स्क रति जो का
नी ॥ के चिंता बोह व्यापे लामिनी ॥ ताते सो मरो
जो होइ ॥ निसचै वैद्यक है सबको इ ॥१३०॥ दुहा ॥
मदन सदन के रति समै ॥ चले सरद बऊ वार ॥
रमन उरष तन ॥ नास्क षपावै नार ॥१३१॥ कुंडर
फल कदली पर पक्क षांड मधु लाय के ॥ लीजे रस
आंबे रस जल औटाय के ॥ पान सात दिन कामनि
जो समषाय है ॥ फुनि हां ॥ रहैन को ऊ रोग महा स्क
वपाय है ॥१३२॥ फल षजूर कदली समर स जांनी
ये ॥ ताते दूना ताल मषांना आंनीये ॥ ती ने पास
दूध संग पीवे लामनी ॥ फुनि हां ॥ पावे परम सुला
स जू रोगन कांमिनी ॥१३३॥ एला लघु पीपरी सी
त सिलाजित आंनि ॥ फुनि पीस छांन के वरी वा
धौ टांक दोइ त्रवांन ॥ पुनि पातस मे तंदुल केज
लसौं नित कर जो उ षाय ॥ अति सुष उपजे ज
हि दिन तो कहत आनंद उपाय ॥१३४॥ कुं ॥ कदल
दल की लसम कर ॥ तामे हरद रलाय ॥ फुनि रस
लसौं लिपीये ॥ हस्ति निरोग निहाय ॥१३५॥ उडद
चूर्ण मऊवा सहित ॥ स्कंद विलाई कंद ॥ गोपय मे
पीवै तरुणि ॥ स्कब पावे आनंद ॥१३६॥ कस्मा विध
बोवर्द्धा अरजुन छाल पिनारू आनो ॥ त्रिफला स
हि तर लाय वषांने ॥ तिल के तेल मेल अवटावो ॥

करे स्यांम कच दिन प्रति लावै ॥२२७॥ नीम औरदा
सौन मंगावै । तिनके तेल मेल उवटावै ॥ चिकुर
न परलावै जो कोय ॥ कच का जर जो सोना होय ॥२२८॥
। अजा दुध भंगरा सन्नानिजे ॥ सरसपात फुनि
सरस घानिजे ॥ कच लावै कांसी मे पीस ॥ अति
स्यांम करे जु विसीस ॥२२९॥ जो चंपे के फूल मंगावे
। बीज धतूरा कोरस ल्यावै ॥ सजल पीस जो लावै
केस ॥ चिकुर होइ नव कजल वेस ॥२३०॥ रसनी
सुआंवरे पियावै ॥ दिन इकवीस केस परलावै ॥
ताकि सरल होय कच स्यांम ॥ घनी वार औ चत अ
भिरांम ॥२३१॥ दुहा ॥ वारन कि द्विज वार के ॥ मधु
र तेलन के संग ॥ कच लावि इकवीस दिन ॥ वढे वा
र वडु अंग ॥२३२॥ वारन के द्विज वार के ॥ माहिष
पय कि संग ॥ कच लावै इकवीसा दिन ॥ वढै बार व
डु अंग ॥२३३॥ इति कच विध ॥ अथ लोम सा
धन ॥ चउपाई ॥ पांच टांक हरताल टांक जो पारे
पीसत आन रलाय टांक इक बार लै ॥ चूना जर सो
पास केस परलाइये ॥ फुनि ह ॥ वारन को कहुं नांउ
न कबहु पाइयै ॥२३४॥ चौपई ॥ चूना अरु आने
हरताल ॥ दोऊ पीस कांजी मे डाल ॥ लावत ता चिकु
र कुयन जाहि ॥ कहुं सदेह तौ या मे नाहि ॥२३५
। पमजस्त को चूर न लावै ॥ विमल तेल कटम
धाव वटावै ॥ सात दिवस फुनि धाम सकाइ ॥ की

जतके सह रऊ य जाय ॥ १४६ ॥ अपमरोम सब हर कर

ऊपर तेल करर कौ ल्यावै ॥ केऊ चलै कोल्यावै नीर ॥

कबही न उपजे बाल सरीर ॥ १४७ ॥ कदली रस कदली

रो ॥ वीसवार ल्लिपस वारे ॥ हर हो इकचस कन को

॥ कोक कल्ला रस नास्कानि लीजे ॥ १४८ ॥ ॥

गोदूध अरु पासे हरतार ॥ चूना उन्ने कदलिर

र ॥ करैलिपतीन जोल्लांम ॥ तहां न होय बार को धां

म ॥ १४९ ॥ इति रोम सा जन संहरणं ॥ वंझायंना

साम सपीप रलेंग रूवफुनि जांनीयै ॥ आसगं

बालकनेर बिऊं निज आंनीयै ॥ कामनि के नव

तमिलऊ चलाईयै ॥ फुनिहां ॥ नारी होइ उरोज

महासरूप पाईयै ॥ १५० ॥ दुहा ॥ घरमि फल हते

न महि ॥ ऊ चलावे उवटाय ॥ उरज होइ ज्यातिही

कठि न ॥ ति ऊ श्री फल न्याय ॥ १५१ ॥ केश राग करण

चौपई ॥ वज बाव ची बा ल्ली अरु आंदका ॥ मांघन

हरिद्र जांन कुनि नदका ॥ चो दसमा घपहत्र अंधी

यारे ॥ पी वे पीस बेसचो बारे ॥ १५२ ॥ मिरच ऊलीज

नले समदाऊ ॥ बरष एकलों साधे को ऊ ॥ मधफ

रअमल कबुषाय न सोय ॥ पिकसम कंवजुत

को होय ॥ १५३ ॥ दुहा ॥ सुंठीमुंडी विहरमी ॥ ववपीप

रअग्नि रांम ॥ सातरात मध्य सोंलषे ॥ करैसुगंध्र

पगांन ॥ १५४ ॥ उसपनिवारण चौपई ॥ हररसोत

आंवरेल्यावे ॥ समकर पीस अंबसोंप्यावे ॥ सात

दिवसजो पीवै कोइ॥ ताकी उफ निवारण होइ॥ १
५५॥ मत्रकों वकै सकै पातहि॥ समकर जो पीवै उवि
प्रातहि॥ ताकी उस निवारण होइ॥ निजनागर
जान तसब कोइ॥ ५६॥ बांझकरण॥ ॥ चीत
और धाउ सम ल्यावै॥ समत्रवांनजल मै उवटावै
उष्यवंत वनिता जब वनिता होइ॥ तीन दिवस
लग पीवै सोइ॥ ५७॥ मगज पीस ताको ले आवै
फुनि स्फकायके तास पिसावै॥ दिन ते चारना
र जो षाहि॥ निसचै तरुण बांझ कयजाहि॥ ५८
बालक दसन जे पहिलै परै॥ आदितवार स्फ
कंचन जरै॥ तरुण बांह सों आं निबंधै हि
त स्फ बांझ महा स्फष पावै॥ ५९॥ विजय [illegible]
वर्ष तीन को आं निगुन॥ दिन पनर [illegible]
निस षाय जो टांक दस॥ नारि बां [illegible]
६०॥ अथ बाइहरण चौपई ६१॥ [illegible]
राई ल्यावै॥ स्फवर के वरहि च उ [illegible]
सो मुष परलाइ॥ बांइ हरकरै [illegible]
ल त्रस्फत जो मुष मलै॥ व [illegible]
॥ कै बाही कै आदहो॥ [illegible]
अथ मुषकंटकहरण॥ [illegible]
रुलो दपि सावै॥ सात [illegible]
मुषपर कंटक न हि [illegible]
न होइ॥ ६३॥ सी घो [illegible]
सों फुनि जव हि [illegible]

मुषविचित्रजयकंटकहरै ॥८५॥ सेवरकटुकअस
हरदा ॥ अजाइदूधपुनिआद ॥ पिसायजोमुषमिलै ॥
एषोवैनिजताहि ॥८५॥ अवटणा ॥ हरदगोपरूसूव
नषा ॥ मोषासरस्योंजांन ॥ कासमीरकहरडफटी
करसमआंन ॥८६॥ टांकमारचंदनअरुण ॥ सम
असमतिहमारा ॥ तवलन्वराजीटांकदसा ॥ पीसोस
कलसमारा ॥८७॥ सेवहूरलकटुतेलमहि ॥ करै
जुउवटनकोइ ॥ विमलरूपराजैतरुण ॥ कम
लवदनमुषहोइ ॥८८॥ मसांनिवारीअथममसाकै
काटिकै ॥ हरिरकूनिकास ॥ चूनासाजीपीसकै
लेपकरैफुनितास ॥८९॥ अथमुषभकिवासद
रणं ॥ चौपई ॥ सिववीरजअरुकवमंगावै ॥
मोषामहिलैदीलेआवै ॥ धनीयाअरुरलाइची
जांन ॥ जलसोंपीसमुषमिलआंन ॥९०॥ नषजप
त्रचवेलीआंने ॥ पत्रजुछुनइलाइचीजांने ॥ उर
बांधपांननमैषाइ ॥ ताकोमुषकवासनजाइ ॥
९१॥ जोनकवासहरन ॥ चौपई ॥ मथरतेलमै
नीवरलावै ॥ तरुनकिरनसोंतपकरावै ॥ जा
कोजोनदुरगंधअतिहोइ ॥ तरुनीतेललगावै
सोइ ॥९२॥ कामकअंसहरणं ॥ जइफलादि
रतबालजुमजानीयै ॥ इहहिंनागभेसचूर
आंनीये ॥ कामतिककामीकाषजोलाइये ॥
फुनिहां ॥ कोककहंरसमकरेकवासनसाइये ॥
९३॥ चौपई ॥ मोषाअरुइलाइचीजांने ॥ नव

कचूरफुनिपत्रजआंनै॥सिरमहिफारिन्हायमें
काइ॥अतिसुवासनिजतातैहोय॥८४॥दोहा
समकैवराआदिदै॥तिलसुवासनहोइ॥कें
कुलेवरलाईयै॥इहजांनतसबकोइ॥८५॥
इतिश्रीकोकमंजरीकविआनंदकृतविर्यविधा
नंदूसमोध्याय॥अथमोहनतिलक॥चंद्रायण
॥स्वेतआकजरकुवकिमोयाजांनीयै॥आणिजो
निजमनसिलनिरजगंनीयै॥पांचूपीसरुधि
सूटीकाकीजियै॥दिषतमोहैनारमहासुषलीजि
॥८६॥दोहा॥पत्रजजालुकमलजड॥मकुलेगीव
जांन॥कंजपसोंसबपीसकै॥तिलकनालपरवा
ना॥८८॥चौपई॥कारीभरपीपरलेआवै॥मीठास
गीओरमंगावै॥अपनेअंगमेलगुनिलेह॥पांचू
पीसकरैजिमषेह॥८८॥विजयछंद॥ फुनिम
फलिजै॥तामेकिजै॥टीकाकाढै॥अतिहितव
॥८९॥चौपई॥अबरूपहोइत्रिया॥जिहिमोहै
कोकंतचाहनितजोहै॥जाकौरवनजीतन
धरइ॥सोनारीइहटोनौकरइ॥९०॥दोहरा॥गो
चंनजोनिरखु॥काढैतिलकनिलार॥जबटी
येगन॥तबवसकुयनरतार॥९१॥अंजन
चौपई॥तगरकुवतालीसमंगावै॥तबवातीस
पीसलगावै॥सर लदीपमहिजिलै॥व
ती वहतेल॥ जायणछंद॥आ
नैन मनमषोपरी

रपारीये॥ रंचक न आंदि मैन जब दीजीये। जो मन न्हा
वे नार ताहि वसकीजीये॥१८३॥ चूर्ण॥ मन सत्व चौ
स कमल दल॥ गोरोचन अभिराम॥ घसि अंजन
नैननि करै॥ निरषत मोहि नाम॥१८४॥
लै ३९ कपिकेपंष॥ चाष अरु कवननि जै॥ तगर कंज को
मूल काक जंघा फुनि लिजे॥ एव ट उपधपी स एरंड दल
मध अर षावै॥ रवि वासर जब होइ वसन मृतु का कौ ल्यावै॥
एरंड पत्र चूरण सहित वसन मध्यनि सचे धरै॥ जा जप
र नारे ज को ऊ वगट प्रेम तासो करै॥१८५॥ नुकांजन॥
षंजन लि पिंजरा मे नारे॥ बरष एक ना को ब ति पारे॥ वर्ष
मध्य जै सौ दिन आहि॥ सात पष निकसे सिर ताहि॥ स
दिन दृष्ट न आवे सोइ॥ पिवासी पिंजर महि होय॥ नैन
षोजन ताति हर दे॥ पंते से हाथ मिल ति हग हो॥१८७॥ सात पंष
उपारि कर॥ कंचन मध्य मंढाइ॥ को ऊ न देषे तास को
मुष महि लज हां जाइ॥१८८॥ अस्त मंजारी आनके॥ गो
घृत ताहि षवाइ॥ तिह जो मारे व मन कुरि सो अंमृ
त ले पाउ॥१८९॥ लीजे वृ लक पास तै॥ जोन यंत्र करसे
इ॥ काचे दीपक मे धरे॥ निज वाती करसोइ॥१९०॥ चंद
इणा॥ आधी रैन अमावस नैननि हारीये॥ अहि वा त
को घीउ दीपक महि जारीये॥ मन षषा परीज पर काज
र कीजीये॥ फुनि हां कोऊ न देषे ताहि नैन जब दी
जीये॥१९१॥ चौपई॥ कदम [illegible] नक हूंते ल्यावे॥ कै
के स्व के फल मंगावे॥ [illegible] निहचै [illegible] वे॥ ते
स बनी की गेर रषावे॥ पु [illegible] वंत जे [illegible]

सहसवारसोआकृतदिजै॥ सातपुहपपदिराषै सोइ॥ जिहिदैसोआपनैवासिहोइ॥२९३॥ अथ मंत्र॥ ॐ चामुंडासोरंपुलगंमोक्वंमावांकलयं स्वाहा॥ चामुंडा॥स्त्रिवसि॥ केसरिकिप्रसगुलमि आवे॥मंत्रलिचलषवारजपध्यावे॥ पदकरजोद जैजास॥ जौनिसचैतियवसऊवैतास॥२९४॥ अथमंत्र॥ ॐचामुंडामहियं॥ उन्नयवलतंनुवा यमोक्वंस्वाहा॥ पत्नीवसकरनं॥ चउपईः॥ क रकेसरकेऊसमगहि॥ वांमपासधरपान॥मथक र पदमनिनामऊर्षि॥पढिइहमंत्रसुजान॥२९५॥ पदमनकोजबदीजीयै॥ हितऊरतवसहोइ॥ लो चनवंतऊयश्रवणसुणि॥मंत्रवससबकोइ॥ २९६॥ अथमंत्र॥ कामिस्वरमहियंछ्रएंमोक्वं स्वाहा॥ ॐकामिस्वरपदिपत्तेमाकारविष्णामहि यंस्वाहा॥ त्रियनीवसिकरण॥ चउपई॥ कदल कीजरकोरसल्यावै॥ एकजायफलमेलपिसावै ॥ फुनिस्कायकरधरैनिरारा॥ जबआवैकामि सानिवारा॥२९७॥ताकोपीसपानमहिराषै॥ ताके वचनपानमहिनाषै॥ होतहीकालदेइजबताहि॥ हितहीकरैपीतनिरवाहि॥२९८॥ अथमंत्र॥ ॐस्कंते गमाया॥ कामदेवायनीस्वाहा॥ सषनीवासिकरण ॥दोहा॥ लगरमूलपीपलपटी॥ जिवहीसंषनिपाइ॥ स्योजुबकवसिअसमसति॥ तैसैवंसऊयजाइ॥ २९९॥ मंत्र॥ ॐमहिलात्स्त्रीमिनीजहीयंमहल्ल...

॥ हस्तनीवसकरनं॥ चउपई॥ पंषपरेवाकीलि
सहतरफुनिचतुरपिसावे॥ पढकरमंत्रतिल
त्माल॥ निरषत्रियामोहेततकाल॥२०॥ अ
मंत्र॥ ॐ धरिकामदेवायस्वाहा॥ दुहा॥ मंत्रउ
लावेचरन॥ तरुनसुरतकेअंत॥ जबलगज
जगतमे॥ वीतवढावेकंत॥२०१॥ चउपई॥ सु
अंतलेअपनोवीरज॥ लावेनामवामपगत
ज॥ एमीमहिन्नावेजोनाह॥ तरुणीकरेप्री
रमाह॥२०२॥ इतिकोकमंजरीकविआन
तनरसुवतीवसकरनं॥ आदसमोअध्य
॥ अथजोनिवर्णन॥ ……एकंजो
मनोमृदुवारिज एकनकीप्रतिलेयक
एकमकी कबुगोरसनासम एकनकीकबु
वगगरी॥ एकनकीजलदीनविराजत
नकीनिसवैपनिहारी॥ कोमलहोइनहोइ
नाइसूषीतमकोमनमोहतनारी॥२०३॥ ति
नारीएकवरिगमाहि॥ नासिकारूपसमान॥ सु
आदितोकोमिले॥ कामीरसिकसुजान॥२०४
रतिरुचिउपजेनाहको॥ नारीमिलेजुकाइ॥ र
चिवढायजोरतिकरे॥ तोरतिरुचिअतिहोइ
२०५॥ नारीएकबरंगमहि॥ सबनारनकोहोत
मदनांकुसकीसिषरसम॥ तहांमनसिजको
त॥२०६॥ जोमदनांकुसकीसिषा॥ वगटपुरष
हि॥ सोककिउनहतहे॥ जोनिगुनिरखे

॥२०७॥सगत परतजोजोनितै॥बीरजद्रवैजुनां
हिं॥ जबलगनिसचैजांनीयै॥गरलवधेनाहिमां
॥२०८॥मदनांकुसजापुरषको॥ तासौलागत
॥द्रवैजवेगहिकांमनी॥लागतिहीअकुलाय
॥२०९॥ मदनांकुसजोंजोंलगै॥तोंतोंवदैअनंग
घटैद्रपकंदकौ॥मिटैतरुनिउमतंन॥२१०॥म
नांकुसजापुरषको॥नागेतासोंजाय॥आरजो
जौरतिकरै॥तारिननैकुअपाय॥२११॥पदमनी
निवर्णनं॥अतिवरतुलकोमलविमल॥होइ
नतापरवाल॥द्रवैवेगमधकगंधसम॥पदमनि
चित्रनिहाल॥२१२॥सखनीयोनिवर्णनं सोरठा॥
बकुतहोतबाल॥द्रवैक्षुर - - गंधसम॥द्रवै
हीउताल॥अतिकगंधसपनिमदन॥२१३॥ह
तनीयोनिवर्णनं॥ कठिनतिछपरिबालजहां॥
लगमहिषीखुरपीन॥द्रवैजगजमदगंध
॥हसतनिअतिरसलीन॥२१४॥द्रवैवेगराति
रंचकरि॥पदमनिचित्रनिबाल॥इकसंषनि
अरुहसतनी॥ द्रवैनहीउताल॥२१५॥इति
योदशमवंध॥अथमदनांकुसवर्णनं॥दुहा॥
मदनांकुसजापुरषको॥ आगेहोइविसाल॥
दकवेरअतिकोतनहि॥द्रवैसुरतउताल॥
१६॥जाकोसमसमअतिहिलघु॥नहिटपतैवा
लनार॥अंतिहोइविनचारणी॥लीजैचतु

वार॥२१६॥ जाको स्फुरन कगोर बऊ॥ नहि दीरघ ल
घु होइ॥ तास मऊत मा और नहि॥ जानत च
तुर कोइ॥२१८॥ मदनांकुस को॥ सिर स्फुरन॥ होइ
स्फुजरत बार॥ द्वै वेग लग परसतै॥ टपतन पां
मै नारि॥२१९॥ इति नुउर रहस्य समाप्त॥ अथ अं
ग वर्णनं॥ ज्ञेयं॥ काकजंग उर उरज कटा॥ पंच
गन षदांन॥ अधर कपोलन बिंबसहित॥ तीना
षमन जान॥२२०॥ अधर कपोलन सीस उरा॥ उ
ज पांच अरु नैन॥ सात अंग मरदन करहु॥
नऊ बऊ वखिमैन॥२२१॥ इति पंचदस मर्दना॥
उतपति कांम कल्लोल के॥ सुनकु रसिक सब को
॥ विलास तब ही बने॥ त्रिय विचत्र जब होय॥२२२॥
हीय रति कीजे संग निस॥ सुनो चाहि स
मुख॥ जो बढि करै तो बल घटै॥ दुय विना त्रिय
हि स्कच॥२२३॥ काकजंघ उर उरज कटि॥ पं
च अंग नाबदांन॥ अधर कपोल कुच सी
स॥ एचुंबन सहितांन॥२२४॥ मस्थल मुख [illegible]
ल पार॥ और है व के हौव॥ एषमन जानै चतुर
नेक न जानै गोव॥२२५॥ सेज वरणनं॥ विमल
और परमल विमल॥ विमल ऊसम स्कवास॥ ऊ
सम विमल कादंबरी॥ विमल सेज की वास॥२२६॥
पांन लवंग इलाइची॥ जातिफल घनसार॥ जाव
त्री संग मेलिके॥ इह विध सेज संवारि॥२२७॥ नाग

पायकरसुदिसदीद उरकउतजांनधि सतिकरजांन
उसाइ कोककसारसमझै

२परमल वसनतन॥ असुपरमल बकुलाय॥ बदन
पांनराजतअधर॥ सजहिबैजेआय॥२२॥तनकं
प्रनिगजगामनी॥नवसतसाजिसृंगार॥ पासनु
वैठहिआयके॥रूपअपारर॥२२॥मंगला॥८
अतिविमलगौरसकावासती(विमलसिफविलाश
जाहदुस्पचंदनचारुपरमल धरैपांनमंगाइ
सोलहसृगारसंवारिस्कंदरगवनसलगमु
राल॥ वैठेसकसनमुषआयसासिमुषरूपपर
मरसाल॥२२०॥अथआलिंगनरीगनकेयां
सषस्तुर॥सोआलिंगनिपांच॥आसनकेसि
रताजइहि॥आलिंगनरतिराच॥२२१॥तरुण
कंधकरिवामधरि॥बैगवातिपातिगिदृ॥ पान
षवावतिप्रीतकरि॥आलिंगनआमोद॥२३२
सुदृत आलिंगना॥तरुणिजंघपातिजंघमहि
मदपावतप्रियजास॥इह आलिंगनसुदतकाहि
उपजतपरमहुलास॥२३३॥प्रेमआलिंगन॥प्रि
कटिलीने एकपग॥द्वितियजंघपरजांन॥ प्रिय
परमलनावाहिजुउर॥प्रेमआलिंगनमांन॥२३
४॥निसंगलिंगन॥पतिकटिलपटैविविचरना
नैरेपरसपरअंक॥उरजगहसचुंबनबदन॥
नामआनंदनिशंक॥२३५॥रुचिआलिंगनप्रिय
नैवैपतिजंघपर॥ नामकंधकरवांम॥ मुखकव
सननियमीकरै॥आलिंगनरुचिनाम॥२३६

उपमचतुरजोकामिनी॥पतिकोआसनदेत
अतिअनंदमनउपजे॥बैठेबिबितनहेत॥२
८॥जोगासनं॥ तियपीठकेपाउसीसऊपरै॥
जुगजंघउरुकरअंगुधरै॥पतिबैठभुजागहि
केलिकरै॥कविआसनजोगविचारकरौ॥२९॥
हिआसनं॥भुजऊपरनांमकेपाउधरै॥पियबैठ
भुजागहिकेलिकरै॥रतिनामकह्यौइहिआसन
को॥रतिप्रीतविनोदविकासनकौ॥३०॥मदनो
द्दितआसनं॥कटिऊपरनारिकेपाउधरै॥पिय
लैगहैकुचकेलिकरै॥मदनोद्दितआसननांम
यहै॥रतिहोतविलासअनंदकहै॥३१॥इंद्रास
नं॥३२॥कामणिकिकदलीदलदोऊभुजधारि
कै॥कामीकरैकिलोलअयबैगारिकै॥ गहैपरस
परअंककोमस्कपस्कपमांनइ॥फुनिहां॥इंद्रनां
मइहआसनजांनसुजांनइ॥३३॥नालआसन
सुंदरकेपगलेइउरुकरिधारिकै॥पियपावैआ
नंदअयबैगारिकै॥गहैपरसपरअंककरैरतिका
मिनी॥फुनिहां॥नालसआसननांमलहैसुकामि
मिनी॥३४॥विपरीतआ०॥पिउपसारिकैहेठपरै॥
चढिनामिनीकामकिलोलकरै॥विपरीतहिनां
मजुआसनको॥मदनोदितकामविलासनको॥
३५॥ऊंटुआसनं॥पियपीठिकेनारिउरोजगहै॥तरु
नीपतिऊपरबैठरहै॥कामनीकामकिलोलकरै॥

करि आसन अंबुज नाम धरै॥२४४॥ रतिपास आस
न चंद्राइण॥ कामी कर पट कामनिया की जंघमे॥ का
मणि के दोऊ पाउ स्कंत नितंब मे॥ सिऊ गहै दोऊ
पाउ करै रति मोषता॥ फुनि हो आसन स्कौ नाम य
है रति पोषता॥२४५॥ हित आसन चौपई॥ कामनि
पीठ पाउ पसारि॥ पीउ पग अलट गहै निज नारि॥ कंत
गहै कामनि के पाय॥ हित आसन बरनै गुनराय॥२४
६॥ मृगासन॥ वनिता पस्क की सम ज्ञायरहै॥ पिय
ऊपर पांन उरो ज गहै॥ ज्यों मुख तें चुंबन केल करै॥
मृग आसन रूप अनूप धरै॥२४७॥ परस्पर आस
न॥ च्यारू चरण पाछै करहै॥ उद्दर चरण परसपर
गहै॥ दंपति केल करै अभिराम॥ आसन जांन परस
पर नांम॥२४८॥ मृणाल आसन॥ पलंग लागर है नि
ज कांम कुनि थाढी॥ कामनि गहै आलिंगन गाढी॥ नि
य न चाय पिय के तुं भरा है कंठ मृणाल आसन इह
कहै॥२४९॥ तमाल आसन॥ दोहा॥ पि... ...
टिग है॥ लियै अंक लीबाल॥ कामी कामनि जंघ... ॥
आसन यह हीतमाल॥२५०॥ सुषपल वृआ...
जंघ उन्नेप करै॥ कर उन्नत कंतके सीस धरै॥
बिव गहै कुच किल व्वे॥ स्कपद्व व...
॥२५१॥ मणावल आसन॥ ना मानि कि दोऊ पा...
जुग धारिकै॥ कांमी करै किलोल स्क पाउ पसारि
पायन को अति ही बल निहचै आंनीयै॥ न.

आसन औसो जानीये ॥ २५३ ॥ स्फुरति आस
यके चरण कंठ पर धारै ॥ कटि कर गहे क्रीडा
सुरत अंत आसन को नांम ॥ याही तै जावै त्रिय
॥ २५४ ॥ ए षोडस आसन करि आवै ॥ तब का मनि
मथ व्रवावै ॥ जतन जु करहि एह वर नारि ॥ फुनि
लि है अनेक रवारा ॥ २५५ ॥ दोहरा ॥ पिय धोवै ता
क ॥ तरुणी सीतल तोय ॥ इक दृढ कौ दृढ है
बकु संकोच न होय ॥ २५६ ॥ नगन जु सोवै नारि स
थटै जु अंग मनोज ॥ जो वस्त तन संग पोटई ॥ वा
मन मथ चोज ॥ २५७ ॥ धृति रति आसन ॥ रहै रैन
होइ घटि ॥ तिमर होइ कछु मंद ॥ सो वत हो आस
करै ॥ आसा हित आनंद ॥ २५८ ॥ स्फुट दित स
तरुनी कोटै पोठे ॥ पिय पोठे रति थान ॥ कटि
कां मनि कि गहे ॥ उदित स आसन नांम ॥ २५९ ॥ स
कोच आसन ॥ तरुणी से रूपाइ पसारि परे ॥ पिय
वर वेग किलोल करै ॥ जुग पीन पयोधर पांन गहे ॥
इह नांम अनंद संकोच कहे ॥ २६० ॥ सिध आ
सन ॥ तिय दच्छण पाव पसारि परे ॥ दूसरो पग पि
कि कंध धरे ॥ पति पांन गहै कुच केल मचे ॥ सि
ध आसन आनंद रचे ॥ २६१ ॥ गिजक आसन ॥
कामिनि कर है ॥ तरुणि चरण धरत जु जति पर सप
कन्त रिजे ॥ उपवर हन तिय है अंक करि केल करि
॥ कामनि ऊपर कंत स क्रीडा कीजिये ॥ गेंडुक आ

सन अनंद स्त्र वनस्कनि लीजिये ॥२६२॥ एपांचो आस
न करे ॥ तब वावे विबि कांम रिमरस्क मऊपजै ॥ रति
हित मांने नाम ॥२६३॥ छंदपधरी ॥ आमोद मुदिते
उनि विमे जांन ॥ निसंग रुचहि आनंद बषांन ॥
आलिंगन पांच कुसुर तरष्ब ॥ आनंद वि बिरसंष
म च्च ॥२६४॥ छप्पय ॥ वधमजोगरति जांन बऊरि
मदनोदित मांनो ॥ जानिंहु लालैस सुमद विपेरि
नवषांनो ॥ फुनि पाछै अंबुज्ज अधररति पार्मत कि
जै ॥ हित आसेन नहैंग ओर दरसैं पर । जीयधरिजै ॥
जांनि तमोलम्म नील ॥ जांति सुषेपलव सुमहो बिल हि ॥
परतें अंत आसेन कहिय एषोडस आसन नलहि ॥
॥२६५॥ दोहा ॥ आरसित उदित संकोच कहि ॥ सिथ
लजु गिडुक जांन ॥ पांच कुआस नद्वितियरति ॥ जा
न कुन्न दस्क जांन ॥२६६॥ सपो मसए पंच हदि ॥ न ए
सकल इकवीस रुचि रसावन स्कषकरन ॥ जावनि
रति कोईस ॥२६७॥ चौरासी आसन सकल ॥ कहेकोक
स्कषकंद ॥ तामहि तेसव अति कविन ॥ कहिये क
अनंद ॥२६८॥ सोरठा ॥ एआसन इकवीस ॥ हरष
उपावन दुषहरन ॥ जावनिरतिकोईस ॥ किलकरन
को अति स्कगम ॥२६९॥ पदमनी आसनलघु
चौपई ॥ मदनोदित सकुच कहि मिनाल ॥ माने स्कष
पदमनी बाल ॥ तीन विसेष सेष सामांन ॥ कहि अ
नंद एह जियजांन ॥२७०॥ चित्रणी आ

नोदित अंबुज आरस॥ फुनि मृणाल विपरी॥
लालस॥ एष टचित्रणि रूषदायक॥ जांनै चउ
कोकरसनायक॥ २८०॥ संपनी चित्रणी आसन॥
दुहा॥ संपनि गिंडुक जोग रति॥ है इरूछ पिरषां
न॥ रूरत अंतारित हस्तिनी॥ प्रगट महाबल जांन
॥२८१॥ ॥ त्रियकरत विपरीतरति॥
अस्थित नुबत जांन॥ रचै जु आसन कोकमहि॥
बनिज वारण वांन॥ २८२॥ ॥ मृग आसन
आरस अवरा उरज आसन जांन॥ त्रिजग आस
न तीन है॥ कहै रूकोक वषांन॥ २८३॥ रति आसन
दुहा॥ मदनोदित अरु जोग बषांन॥ गिंडुकासि
पल महाबल जांनै॥ रूपपद्म वरति संकोच॥ नव
रति जांन आंनि जिय लोच॥ २८४॥ विपरीत आस
न॥ दुहा॥ हित अंबुज रति पोषता॥ अस विपर
त अनंद॥ एआरा विपरीत रति॥ कहै कोक रूप
कंद॥ २८६॥ अस्थित तांत्रिया॥ अस्थित इक परस
परहि॥ लालस करि जिय जांनि॥ एक तमाल
मृणाल लहि॥ त्रिवग स्थित अयवांन॥ २८७॥ ना
री आसन॥ अंबुज रित पोषैत विपरीत॥ लालस
हित जीय धरि प्रीत॥ आसन पंच तरुणि हित करै॥
कोक रीत इह विधउ चरै॥ २८८॥ दंपति रूष आस
न॥ आसन जास परस पर नांम॥ ताकौ करत पुरष
अरु नांम॥ सिषप चहसै आसन रहै॥ त्रिया उर

प्रकरन कौ कहै॥२७९॥ सुनत रसिक जन श्रवण सों
नि॥ कोक रीत सुष रास॥ चाहत चतुर सरोज कौ॥
करत मूढ़ उपहास॥२८०॥ छंद पधरी॥ * * *॥
प्रथम अमरावति कृतौ कोक॥ नहिं जानत को उ
मृत लोक॥ इक कृतौ बादसाही मनेस॥ तिह अग
र कीयो क्रीडा विसेस॥२८१॥ ता पाछे जौ कवि असि
ष॥ तिह रच्या काम करि २ विसेष॥ कामहि अदीप
असु पंचबांन॥ उनि रति रहस्स जांने सुजांन॥२८२॥
उर मंदन सिव आदि अनंग॥ आरति रंजन सु
मरति संग॥ पढ सकल कवी करि २ विचार॥ वरनै
अनंद कवि कोक सार॥२८३॥ दुहा॥ सरग किप
सोर हसरस॥ रचे जु वज्र विध छंद॥ पढत रतिरंग
नवीन विचित हित आनंद॥२८४॥ इति श्री कोक
मंजरी कवि अनंद कृत षोडस प्रबंध समाप्त॥
संवत १८७५ रा जेष्ट वदि ६ वासरे लिषतं
सिं॥ बुधमल राय कुरम भे॥ श्री॥ ॥श्री॥ ॥श्री
॥ बिनाल पचीसी॥ दुहा॥ पाग जो बांधे पैन चलती
हो दौसे री नासरती॥ जेम वचन कहि कुरप हस
वे॥ और बिनाल कहा ढोल बजावे॥१॥ कुरपध
कांवे पै न चलती॥ फेन्यो प्रह्निरा पैम दमती॥ चौ
हटै ऊन्नी पांन मंगावे॥ और०॥२॥

रहेसिणगारी॥ जावद्दिपरिघरिरातअंधारी॥
पांनहीपहिरद्दघाईआवे॥ ओ०॥३॥ ह्वासीक
रेबैठचौबारे॥ थाढीदेषेऊपरवारे॥ काकरी
मारसंकेतजणावे॥ ओ०॥४॥ विरऋचषांच
बांधे॥ कांमीदेषसनयणसरसांधे॥ २रषदेषीनै
नयणनचावे॥ ओ०॥५॥ आपकरतऊचम
रद्दनन्नारी॥ षांचैचीरनिसासामारी॥ बांकेनय
णांनयणमिलावे॥ ओ०॥६॥ जांनबूझमिसनि
तकीबोलै॥ सरमबातसबहीसांषोलै॥ वादेऊ
रषांपांनचवावे॥ ओ०॥७॥ कंदेइनधोवन
ऋन्नारी॥ नायनबीपनओरस्फनारी॥ विरर
उनकेघरिजावे॥ ओ०॥८॥ फगहिद्दउउर
नद्दती॥ घरिरफिरिरउदंगतिलेती॥ सन
मुषदेषीकाषवजावे॥ ओ०॥९॥ बकुतरहेमा
ताकेजाघर॥ असतियजातद्दउद्दरबाहिर॥
जुबादेषकेषलमचावे॥ ओ०॥१०॥ देषिरनेकरे
षंषारा॥ दिषलावेसबअंगउघारा॥ गहिरसव
दकहिपायलठमकावे॥ ओ०॥११॥ कुरषांविच
जायषलेसारी॥ दांतांकरिफोडेसोपारी॥ षल
वेरीसोंद्दनेहवधावे॥ ओ०॥१२॥ हसिरमींगंद
तांबोले॥ विररबाजारद्दिक्कोले॥ जातांकुरषांनै

वतलावै॥औ०॥२३॥ मारगचलतीपाछैहेरै॥मु
हमचकोडीचौडैफेरै॥ बांहऊचीकरिकाषदि
षावै॥औ०॥२४॥ पहिरफुलेलसमारैपाटी॥मू
थैसीसफुहेपकीआटी॥दिनेकीदातकबाढि
दिरावै॥औ०॥२५॥राजपंथनीकलतीबालि
॥तरुणपुरषसदैनीताली॥लंगरांसेतीतालि
लावै॥औ०॥२६॥तरुणदेषकैकाषजन्ना
वि॥मेडअंगबहुआलसआवै॥पहिरणदी
लैकरिदिषलावै॥औ०॥२७॥ षिडकीषाटल
गाईसोवै॥परघरवैठीपतिहिविगोवै॥ पाम्री
सीवऊतजगावै॥औ०॥२८॥ आपहीअध
२५सणसचांपे॥वारवारमुषअंचरफांपे॥धर्म
थूवतेअधिकसफहावै॥औ०॥२९॥ फाटक
सिफविठाई॥दीवाधरीयावार॥औरकहा
कहूयहकहे॥आऊवैविमुहमार॥२०॥ पाछै
जोवैमुषहसै॥बोलावीदेगाल॥वमकैरपग
वै॥तोसाचीछिनाल॥२१॥ फीलधुजावैपे
मैचलती॥उरहोपरहोवैऊदिसजोती॥आधै
माथैचीररषावै॥औ०॥२२॥नीचोजोवैवां
हलावै॥ थिनगरकरजिहरवजावै॥औ०
२३॥प्रगटकरीछिनालपचीसी॥ वकुं

हेमगारपचीसी॥ उन्नैजननकूं निजलाजगमावे
॥ औ०॥२४॥ कवत्त॥ दृगदेतसेरी फिरपीवै॥
गेदेषतहैंउसासन्नास हाथलाइगालके॥ नि
लजाइपीनकूं हुलावत बाजारनमे हांसीकरै
नरतासूं कहरजुलासके॥ छिगनकेसरसंधै
कांमीदेषहूरनसूंन्हहकूं नचायकै दिषायज
तलालनकै॥ छै॰ उनकेकनांषांन व स्तकौ बिन
यलेतकहैनै मलनबन हैं बिनालनकै॥२५॥ इति॥